अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :-

वैज्ञानिक प्रणाली का साहित्य समीक्षा यह मुख्य भाग है। एवं यह सामाजिक विज्ञान या भौतिकीय प्रकृति के वैज्ञानिक अनुसंधानों क्षेत्रों में कार्यान्वित किया जाता है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा अनुसंधायक की जिस क्षेत्र मे वह अनुसंधान करने वाला है, उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचित कराती है। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करने से पिछले अनुसंधायकों ने अपने अध्ययन में और आगे अनुसंधान के लिए क्या अनुशंसाएं की थीं।

सम्बन्धित साहित्य के ज्ञान से अनुसंधायक का अन्य व्यक्तियों द्वारा किये गए कार्य से पूर्ण परिचय हो जाता है। और वह अपने उद्देश्यों का स्पष्ट व सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधायक अलाभप्रद व अनुप्रयोगी समस्याओं से बच सकेगा। यदि अध्ययन के परिणामों की स्थिरता व वैधता भली प्रकार सिद्ध हो चुकी है तो उसे दोहराना निरर्थक है। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधायक अनुसंधान प्रकिया का समझता है। जिससे यह ज्ञान लेता है कि अध्ययन किस प्रकार करता है। उसे पहले अध्ययनों में प्रयुक्त यंत्र व औजारों की भी जानकारी मिलती है जो सफल व उपयोगी रहे थे। उसे उन सांख्यिकी विधियों की अर्न्तदृष्टि भी मिल जाती है। जिनके द्वारा परिणामों की वैधता सिद्ध की जाती है।

2.2 सम्बन्धित शोधकार्य का पुनरावलोकन :-

1. **शर्मा (1981)** ने स्कूली एवं महाविद्यालय के छात्रों एवं सामान्य जनता में उनके अनुसार ही पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन किया इसके आधार पर निष्कर्ष निकाला कि यदि माता पिता द्वारा 12 वर्षों

से कम के बच्चों का पर्यावरण शिक्षा दी जाती है तो वह अधिक स्थायी होती है साथ ही माता पिता द्वारा दी गई नैतिक शिक्षा से बच्चे पशुओं एवं पेड़ पौधों के प्रति दयावान हो जाते हैं। और उस समय युवा अवस्था में दी गई पर्यावरण शिक्षा अधिक प्रभावी होगी यदि पर्यावरण शिक्षा का व्यवहारिक रुप में स्नातक स्तर पर अध्ययन कराया जाये साथ ही युथ क्लब की सहायता पर्यावरण के विकास संबंधित क्षेत्र की शिक्षा दी जाए।

2. **गुप्ता, ग्रेवाल एवं राजपूत (1981)** ने अपने अध्ययन में बताया कि औपचारिक, अनौपचारिक, औपचारिकेत्तर ग्रामीण एवं शहरी स्कूल के 7–12 वर्ष के बच्चों में पर्यावरण जागरुकता के मुख्य आयामों के सम्बन्ध में निश्चित एवं समान छबि है। कुछ क्षेत्रों में इन तीनों समूहों में जागरुकता वस्तुतः अपर्याप्त है। यह वे आयाम थे जो आलोचनात्मक विचार एवं ज्ञान के उपयोग में आवश्यक थे जो छात्रों में विकसित नहीं किये गये हैं। साथ ही वे ठोस अनुक्रिया करने की अवस्था में मौजूद थे।

3. **अनुराधा, (1978)** ने अपने अध्ययन "पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता" भोपाल के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के छात्रों मे अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने निम्न निष्कर्ष निकालेः–

(i) कक्षा 9 के विद्यार्थी प्रदूषण से पर्यावरण के कारण पर्यावरण में होने वाले नुकसान के बारे मे जानते हैं। फिर भी उन्हें पर्यावरण एवं प्रदूषण जैसे परिभाषिक शब्दों को समझाने हेतु अधिक निर्देशों की आवश्यकता है

(ii) छात्र व छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता के प्रति कोई अन्तर नहीं है।

(iii) निजी विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण जागरुकता की दक्षता शासकीय विद्यालय के छात्रों से अधिक है।

(iv) विभिन्न जागरुकता स्तर वाले विद्यार्थियों के प्रदूषण की छबि पर प्राकृतिक एवं अन्तिम टेस्ट में काई अन्तर नहीं है।

4. **राजपूत व उनके साथियों ने 1980**में भोपाल शहर के शासकीय प्राथिमिक विद्यालय के कक्षा तीन एवं चार के लिए 'पर्यावरण प्रोजेक्ट' आयोजित कराया जिसमें उन्होंने पाया कि विज्ञान के द्वारा बच्चों में पर्यावरण जागरुकता की जा सकती है। इन्होंने सन् 1985 में एक दूसरा अध्ययन किया जो प्रथम का पूरक था। इसमें उन्होंने पाया विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान पर्यावरण जागरुकता करने में सहायक है। इसमें उन्होंने 14 नियन्त्रित एवं प्रायोगिक समूह में अध्ययन किया। पर्यावरण जागरुकता के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के बाद उन्होंने पाया कि प्रायोगिक एवं नियन्त्रित समूह के 9 युगल में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि अन्य पाँच में अन्तर था जिनको पर्यावरण शिक्षा के द्वारा पढ़ाया गया था।

5. **भट्टाचार्य जी.सी. (1996)**

''वाराणसी में प्राथमिक स्तर की छात्राओं एवं उनके माता पिता के पर्यावरणीय जागरुकता का अध्ययन'' उनके संशोधन कार्य के निम्नानुसार उददेश्य थे।

(i) वराणसी के प्राथमिक स्कूल में तीसरी एवं पाँचवी में पढने वाले छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरणीय जागरुकता का अन्तर उनके दृष्टिकोण एवं पर्यावरण संबंधी जिम्मेदारी के क्षेत्र में पता लगाना है।

(ii) वाराणसी के कक्षा तीसरी एवं पाँचवी की छात्राओं एवं माता पिता के पर्यावरणीय जागरुकता का स्तर पता लगाना।

(iii) अध्ययन के लिए वाराणसी से तीसरी कक्षा के 290 विद्यार्थियों एवं पाँचवी कक्षा के 180 विद्यार्थियों व उनके 290 माता पिता प्रदत्तों के रुप में चयनित किए गये। सह सम्बन्ध गुणांक एवं t मान द्वारा संग्रहित समांको को विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गयेः

1. पर्यावरणीय जागरुकता के संदर्भ में कक्षा तीसरी एवं पाँचवी की छात्राओं में कोई भी भेद नहीं पाया गया।
2. दृष्टिकोण एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारी के संदर्भ कक्षा तीसरी एवं पाँचवी की कक्षाओं में कोई सम्बन्धित अन्तर नही पाया गया।
3. कक्षा तीसरी एवं कक्षा पाँचवी के विद्यार्थियों एवं उनके माता पिता के पर्यावरणीय जागरुकता के संदर्भ में सह सम्बन्ध गुणांक पाया गया है।

6. **प्रजापत (1996)** :– कक्षा चौथी में पर्यावरणीय जागरुकता विकास के कार्यक्रम के परिणाम का अध्ययन करना।

अध्ययन के मुख्य उददेश्य :–

1. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण सम्बन्धी जागरुकता कार्यक्रम का निर्माण करना।
2. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण सम्बन्धी जागरुकता निर्माण करना।
3. कक्षा चार के छात्रों पर्यावरण सम्बन्धी जागरुकता में बुद्धि–लब्द्धी के परिणाम का अध्ययन करना।

4. कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण सम्बन्धि जागरुकता में लिंग के परिणामों का अध्ययन करना।

संशोधनकर्ता ने न्यायदर्श का चयन गांधीनगर, एवं गुजरात के प्राथमिक निजी स्कूल से लिया एवं संग्रहित समंकों के लिये पर्यावरणीय जागरुकता प्रश्नावली का उपयोग किया, संग्रहित समंकों के विश्लेषण के लिये t मान एवं ANOVA सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग किया –

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

(i) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरणीय जागरुकता को बढाने में पूर्व सम्पादित प्रारंभिक पर्यावरणीय जागरुकता का मुख्य कार्य रहता है।

(ii) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरणीय जागरुकता के विकास में पर्यावरणीय जागरुकता को बढाने वाले कार्यक्रम में सफलता मिलती है।

(iii) कक्षा चार के छात्रों मे पर्यावरणीय जागरुकता में बुद्धि लाब्धि एवं लिंग का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

पुस्तक से शिक्षा ग्रहण करने के अलावा छात्र कार्यक्रम द्वारा शिक्षा ग्रहण करने में ज्यादा उत्साहित एवं प्रेरित दिखाई दिये।

7. **विक्टेरिया मूर्वोग (1987)**

"माध्यमिक स्कूल के ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान की जागरुकता एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना।"

अध्ययन के उददेश्य

1. कक्षा IX, X एवं XI के ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय जागरुकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण का पता लगाना।
2. कक्षा IX, X एवं XI के ग्रामीण माध्यमिक छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरणीय ज्ञान पर्यावरणीय जागरुकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण के अन्तर का पता लगाना।

3. ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय जागरुकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण के सम्बन्ध का पता लगाना।

मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों से 146 ग्रामीण छात्र एवं 34 ग्रामीण छात्राओं के प्रदत्तों को लिया गया। स्वयं निर्मित पर्यावरणीय जागरुकता, दृष्टिकोण मापनी एवं खुली प्रश्नावली का उपयोग किया। समंकों को संग्रहित करने के लिए किया गया। संग्रहित समंकों पर मध्यमान, सहसम्बन्ध, मानक क्विलन t मान का उपयोग किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. हर स्तर एवं समूह के अध्ययन के दौरान माध्यमिक ग्रामीण छात्र का पर्यावरणीय ज्ञान माध्यमिक ग्रामीण छात्राओं के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से अधिक पाया गया।
2. पर्यावरणीय जागरुकता का स्तर माध्यमिक ग्रामीण विद्यार्थियों में अधिक पाया गया।
3. पर्यावरणीय जागरुकता का स्तर माध्यमिक ग्रामीण छात्रों मे माध्यमिक ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।
4. ग्रामीण छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय दृष्टिकोण एवं पर्यावरणीय जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

8. केनडी (50 के पूर्व) फ्लोरीड, स्टेट यूनीवर्सिटी

"शालेय उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के बीच सम्बन्ध" का अध्ययन किया।

अधिगम क्रिया की ओर धनात्मक दृष्टिकोण बदलते हैं जो छात्र अतिउच्च परिवार से आते हैं जिनकी उच्च इच्छा, आकांक्षा एवं जिन्हें असीमित साधनों का उपयोग मिलता है।

9. फ्रासर (1959) यूनीवर्सिटी ऑफ मैनचेस्टर ब्रिटेन

" वैयक्तिक शालेय उपलब्धि एवं सामाजिक सार के सम्बन्ध का अध्ययन" उन्होंने निम्नानुसार निष्कर्ष निकालाः-

उच्च कौशल वाले माता-पिता के छात्र बुद्धि में ज्यादा बढोतरी पाते है एवं कम कौशल वाले, समूह के छात्रों में शालेय जीवन सम्बन्धी कम आशायें पायी गयी।

10. **सत्यनानदम (1969)** कुरनुल गर्वन्मेंट कालेज ऑफ एज्यूकेशन, साउथ

"शालेय उपलब्धि एवं सामाजिक - आर्थिक स्तर का अध्ययन"

अध्ययन के निष्कर्ष

1. दसवीं तक शिक्षित माता-पिता के छात्रों की उपलब्धि की अपेक्षा स्नातक तक शिक्षित माता-पिता के छात्रों की उपलब्धि ज्यादा थी।
2. उच्च एवं निम्न आर्थिक स्तर के छात्रों में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. उच्च एवं मध्यम आर्थिक स्तर के छात्रों मे सार्थक अन्तर पाया गया।
4. मध्यम एवं निम्न आर्थिक स्तर के छात्रों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।